IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में केसरी सिंह बारहठ के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

डॉ. अरविन्द आशिया
शोध निदेशक
पूर्व प्राचार्य
विद्याभवन गोविन्दराम सेकसरिया
शिक्षक महाविद्यालय, सीटीई, उदयपुर

सुमन शर्मा
शोधार्थी
मोहनलाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय, उदयपुर

शोध सार –

बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का स्वरूप भी बदलना चाहिये। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर नई शिक्षा नीति 2020 का स्वरूप निर्धारित किया गया है, साथ ही भारतीय शिक्षा के पारम्परिक आधार को भी उसमें जोड़े रखा गया है। इसी सन्दर्भ में एक शताब्दी पूर्व केसरी सिंह बारहठ द्वारा दिए गए शैक्षिक विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पूर्ण परिलक्षित होते हैं और यह कहा जा सकता है कि इतने वर्ष पूर्व जिस प्रकार के शिक्षा सुधारों की आवश्यकता अनुभव की गई वही स्थिति आज भी अनुभव की जा रही है।

प्रस्तावना –

शिक्षा मानव विकास का आधार है। आदि मानव से आधुनिक मानव तक की यात्रा मनुष्य ने शिक्षा के प्रकाश में ही पूर्ण की है। समयानुसार परिवर्तन के साथ–साथ शिक्षा का स्वरूप भी बदला और शिक्षा अपने परम्परागत स्वरूप से आधुनिक स्वरूप में परिवर्तित हो गई। परन्तु मनुष्य की आवश्यकताओं के आधार पर शिक्षा का मूल स्वरूप पारम्परिक ही रहा। भारतीय शिक्षा प्रणाली वैदिक शिक्षा, बौद्ध शिक्षा, मध्यकालीन शिक्षा, ब्रिटिशकालीन शिक्षा के रूप में परिवर्तित हुई है। स्वतंत्रता के पश्चात लोकतान्त्रिक परिप्रेक्ष्य के अनुसार शिक्षा नीतियाँ निर्धारित की गई। समय के साथ बदलती हुई परिस्थितियों की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा नीतियों में भी परिवर्तन हुआ। परन्तु भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के मूल आधार

मूल्य आधारित शिक्षा व नैतिक शिक्षा के स्वरूप को परिवर्तन के साथ जोड़े रखा गया क्योंकि यह विश्वपटल पर हमारी पहचान है। इसी सन्दर्भ में कालान्तर में विभिन्न दार्शनिकों, विचारकों एवं शिक्षाविदों ने अपना शैक्षिक दर्शन व शैक्षिक विचार प्रस्तुत किए हैं जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी उतने ही प्रासंगिक है जितने तत्कालीन परिवेश में रहे होगें।

ठाकुर केसरी सिंह बारहठ महान कवि, क्रान्तिकारी, शिक्षाविद् व समाज सुधारक थे। उन्होंने सुप्त क्षत्रिय जाति में राष्ट्रीय चेतना का शंख फूंकने की दृष्टि से समाज सुधार व शिक्षा प्रसार को माध्यम बनाया। उनके अनुसार शिक्षा ही एक मात्र माध्यम है जिसके द्वारा युवाओं में देशप्रेम, राष्ट्रचेतना, स्वाभिमान और स्वतन्त्रता की भावना को जाग्रत किया जा सकता है।

शोध के उद्देश्य –

- केसरी सिंह बारहठ के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मुख्य सिद्धांतों का अध्ययन करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में केसरी सिंह बारहठ के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

शोध विधि – विषय वस्तु विश्लेषण विधि

स्रोत –

- **प्राथमिक स्रोत** – प्राथमिक स्रोत में केसरी सिंह बारहठ द्वारा लिखे गये पत्र, साहित्य, काव्य व रिर्पोटों को आधार बनाया गया है।
- **द्वितीय स्रोत** – द्वितीयक स्रोत में केसरी सिंह बारहठ पर लिखी गई पुस्तकों, शोध पत्रों व लेखों को आधार बनाया गया है।

मुख्य शब्दावली –

तकनीकी शिक्षा, मूल्य शिक्षा, खालसा भूमि, बहुविषयक, समग्र शिक्षा।

जीवन परिचय –

केसरी सिंह बारहठ का जन्म 21 नवम्बर 1872 को उनकी पैतृक जागीर के गाँव देवपुरा (शाहपुरा राज्यान्तर्गत) में हुआ था। इनके पिता कृष्ण सिंह बारहठ तत्कालीन राजपूताने के माने हुए राजनीतिज्ञ, इतिहासकार व विद्वान थे। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्यत्व में मनु–स्मृति, न्याय, सांख्य और वैषेशिक आदि शास्त्रों का अध्ययन किया था। केसरी सिंह के जन्म के एक माह पश्चात ही उनकी माता बख्तावर कँवर का निधन हो गया था। अतः उनका पालन पोषण उनकी दादी श्रृँगार कँवर की देखरेख में हुआ। उनकी

प्रारम्भिक शिक्षा शाहपुरा में महन्त सीताराम जी के सानिध्य में प्रारम्भ हुई। उसके पश्चात उदयपुर में काशी के विद्वान पंडित गोपीनाथ शास्त्री को बुलाकर केसरी सिंह की शिक्षा—दीक्षा संस्कृत परिपाटी से प्रारम्भ हुई। उन्होंने संस्कृत व हिन्दी के अतिरिक्त बांगला, मराठी, गुजराती भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त किया। ज्योतिष, गणित, इतिहास, दर्शन, मनोविज्ञान खगोलशास्त्र आदि का अध्ययन कर उसमें भी विद्वता प्राप्त कर ली थी। उनके व्यक्तित्व पर उनके पिता कृष्ण सिंह बारहठ, पिता के मातुल कविराजा श्यामलदास एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती का अत्यधिक प्रभाव था। समाज सुधार एवं शिक्षा सुधार की प्रेरणा उन्हें इन्हीं से प्राप्त हुई थी। वे इटली के राष्ट्रपिता मैजिनी को अपना राजनैतिक गुरू मानते थे।

केसरी सिंह बारहठ ने क्षत्रिय एवं चारण समाज में व्याप्त कुरीतियों व अशिक्षा के अन्धकार को दूर करने के लिए शिक्षा सुधार की अनेक योजनाएँ तैयार की जिससे राजस्थान भी शिक्षा के क्षेत्र में अन्य प्रान्तों के समान अग्रणी बन सकें। उन्होंने अजमेर में क्षत्रिय कॉलेज की स्थापना, तकनीकि शिक्षा के लिए छात्रों को जापान भेजने की योजना, क्षात्र शिक्षा परिषद् और छात्रावास स्थापित कर मौलिक शिक्षा देने की योजना बनाई थी।

केसरी सिंह बारहठ के शैक्षिक विचार –

केसरी सिंह बारहठ उच्च कोटि के विद्वान, शिक्षाविद्, समाज सुधारक एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। तत्कालीन ब्रिटिश शासित समाज में उन्होंने शिक्षा की महत्ती आवश्यकता को अनुभव किया। इतिहास के विद्यार्थी होने के कारण वे राजपूताने के गौरवपूर्ण इतिहास से परिचित थे। अंग्रेजी शासन के सामने नतमस्तक पंगु के समान राजपूत समाज की दुर्दशा को देखकर वे अत्यन्त व्यथित थे और इसका एक मात्र कारण परम्परागत शिक्षा का अभाव एवं अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव को मानते थे। उन्होंने राजपूत व चारण समाज में राष्ट्र चेतना की जागृति हेतु अनेक महत्वपूर्ण शिक्षा योजनाएँ प्रस्तावित की जिनका उद्देश्य समाज में व्याप्त जटिलताओं व कुरीतियों को दूर कर एक स्वाभिमानी एवं गौरवपूर्ण युवा पीढ़ी को तैयार करना था।

केसरी सिंह बारहठ को कोटा राज्य में डिप्टी इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल्स के पद पर नियुक्त करने हेतु आमंत्रित किया गया। तब उन्होंने रायबहादुर लाल शिव प्रसाद, कौन्सिल मेम्बर और कोटा महाराव के भूतपूर्व गार्जियन को 1905 में पत्र द्वारा शिक्षा के सम्बन्ध में अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किये। वे विचार आज एक शताब्दी के पश्चात भी उतने ही प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

केसरी सिंह बारहठ के प्रमुख शैक्षिक विचार –

- शिक्षा विभाग की उन्नति और अवनति पर देश की उन्नति और अवनति निर्भर है। अतः इस विभाग की महत्ता और उपयोगिता को स्वीकार कर देशी राज्यों को इसके लिये उदार और स्थायी नीतियों का निर्माण करना चाहिए।
- राजपूताने में विद्या विभाग हेतु नवीन व्यवस्था इस प्रकार की जानी चाहिए जो प्रत्येक राज्य के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करें।
- भारत में शिक्षा के लिए प्रसिद्ध देसी राज्यों जैसे बड़ौदा, मैसोर और ट्रावन्कोर आदि के विद्या विभागों की व्यवस्था के अनुभव हेतु राजपूताने से योग्य डेपुटेशन भेजा जाए।
- पाठ्यक्रम का मूल सिद्धान्त लोगों को मात्र आजिविका के योग्य बनाना नहीं वरन् देशभक्त, सच्ची और स्वतन्त्र, परिश्रमी नागरिक बनाने का होना चाहिए।
- ऐसे नवीन पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाना चाहिए जिससे प्रजाजन राज्य धर्म और प्रजा धर्म एवं कृषि, शिल्प, वाणिज्य आदि की शिक्षा प्राप्त करके देश के लिए आत्मनिर्भर व उपयोगी बन सके।
- शिक्षक उच्च शिक्षा प्राप्त होने चाहिए और उनके लिए स्थाई कर्त्तव्य भी निर्धारित होने चाहिए।
- स्कूलों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए।
- राज्य की आमदनी के एक हिस्से से विद्या विभाग की स्थायी आमदनी निर्धारित की जानी चाहिए।
- उत्तीर्ण विद्यार्थियों को राज्य द्वारा उचित सहायता दी जानी चाहिए।
- गाँव देहात में शिक्षा के लाभ और आवश्यकता को प्रजा के मन में जाँचने के लिए एक योग्य उपदेशक भेजा जाना चाहिए।
- राज्य की समस्त प्रजा चाहे वो खालसे ही हो या जागीर की, राज्य की प्रजा ही है। अतः सभी की शिक्षा का प्रबन्ध राजकीय विद्या विभाग द्वारा किया जाना चाहिए।
- शिक्षा में सुधार की गति को तीव्र रखना चाहिए। राजपूताने की प्रजा शिक्षा के विषय में अन्य राज्यों की प्रजा से पिछड़ गई है यदि तेज गति से सुधार कर इस अन्तर को कम नहीं किया गया तो शिक्षा अभाव में लाखों मनुष्यों को पशुवत जीवन जीने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

- प्राथमिक शिक्षा इतनी सुलभ, सस्ती तथा विस्तृत होनी चाहिए जिसका लाभ गरीब से गरीब राजपूत उठा सकें।

- ऐसी शिक्षा पद्धति प्रारम्भ होनी चाहिए जो सर्वसाधारण राजपूतों को सुशिक्षित, सुशील, सदाचारी एवं सच्चा क्षत्रिय बनाए।
- जब तक व्यक्ति के सम्मान से जीने संसाधन सुलभ नहीं होंगे तब तक कोई समाज उन्नति नहीं कर सकता है। शिक्षा व्यक्ति को सम्मानित जीवन का मार्ग दिखाती है।
- किसी भी देश व जाति की जीवन्तता का आधार उसकी भाषा व संस्कृति है। भाषा के विकृत होने से संस्कृति का स्वरूप भी बिगड़ जाता है। अतः भाषा का संरक्षण आवश्यक है।
- शिक्षा हिन्दी विषय में दी जानी चाहिए तथा अंग्रेजी को गौण विषय बनाया जाए।
- व्यवहारोपयोगी शिक्षा और सदाचरण पर मुख्य लक्ष्य।
- ज्ञानार्जन की ओर अभिरुचि उत्पन्न करना तथा कोरी उपाधियों से मोह छुड़ाना।
- आठ वर्ष तक की अवस्था वाले बालकों को बालवाड़ी पद्धति से शिक्षा देना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 21वीं सदी की प्रथम शिक्षा नीति है जिसको राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के बाद आधुनिक परिप्रेक्ष्य की बदलती हुई आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इस शिक्षा नीति में भारत के प्राचीन ज्ञान, दर्शन, मूल्य, परम्परा व समृद्ध वैचारिक परम्परा को समावेशित कर आधुनिक स्वरूप दिया गया है। इस नीति का उद्देश्य ऐसे मानवों का विकास करना है जिनमें परम्परागत नैतिक मूल्यों के साथ तार्किक, रचनात्मक एवं वैज्ञानिक चिंतन व कल्पना शक्ति का समावेश हो। यह शिक्षा नीति बालक के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। नई शिक्षा नीति प्राचीन भारत की समृद्ध ज्ञान परम्परा व गौरव को पुर्नस्थापित करने की दिशा में एक सकारात्मक पहल है।

इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति का विजन भारतीय मूल्यों पर आधारित उच्चतर गुणवत्ता युक्त शिक्षा उपलब्ध करना है जिससे भारत वैश्विक ज्ञान की महाशक्ति बने और एक जीवंत व न्यायसंगत समाज के रूप में स्थापित हो। यह नीति छात्रों में भारतीय होने के गर्व को न केवल विचारों में बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्यों में और साथ ही ज्ञान, कौशल, मूल्य और सोच में भी परिलक्षित करने के संकल्प के साथ प्रतिबद्ध है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मूलभूत सिद्धान्त –

- हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की पहचान कर उनके विकास हेतु प्रयास करना।
- बच्चों में बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान जैसे मूलभूत कौशलों का विकास करना।
- विद्यार्थियों में उनकी प्रतिभा एवं रुचियों के आधार पर कार्यक्रम चुनने का लचीलापन।

- विभिन्न शैक्षिक क्षेत्रों जैसे कला व विज्ञान, पाठ्यक्रम व पाठ्येतर, व्यावसायिक व शैक्षणिक धाराओं के मध्य असंबद्धता को दूर करना।
- बहु–विषयक व समग्र शिक्षा का विकास।
- रचनात्मक, तार्किक सोच व नवाचारों को प्रोत्साहन।
- मूल्य आधारित शिक्षा जैसे – नैतिक, मानवीय और संवैधानिक मूल्य।
- शिक्षकों की गुणवत्ता में वृद्धि व व्यावसायिक विकास की उत्कृष्ट व्यवस्था।
- भारतीय जड़ों और गौरव से जुड़े रहना व आधुनिक संस्कृति के साथ प्राचीन ज्ञान प्रणालियों व परम्पराओं को शामिल करना व उनसे प्रेरणा लेना।
- शैक्षिक विशेषज्ञों द्वारा निरन्तर अनुसंधान और नियमित मूल्यांकन के आधार पर प्रगति की सतत् समीक्षा।
- तकनीकी के उपयोग पर जोर।
- गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा तक प्रत्येक बालक की पहुँच निश्चित करना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में केसरी सिंह बारहठ के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता –

- नई शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा देने की बात कही गई है। केसरी सिंह बारहठ भी मातृभाषा के पक्षधर थे।
- नई शिक्षा नीति में तकनीकी शिक्षा के यथासम्भव उपयोग पर बल दिया गया है। वही केसरी सिंह बारहठ द्वारा तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रों को जापान भेजने की योजना बनाई गई थी। उनके अनुसार जापान ही एकमात्र ऐसा देश है जो रूस और युरोपीय शक्तियों को टक्कर दे सकता है।
- नई शिक्षा नीति में अध्यापक शिक्षा की महत्ता स्पष्ट की गई है और केसरी सिंह बारहठ के द्वारा भी शिक्षकों की उच्च शिक्षा व उनके स्थायी कर्त्तव्यों को सुनिश्चित करने की अनुशंसा की गई है।
- नई शिक्षा नीति में बालकों को व्यावसायिक व कौशल आधारित शिक्षा देने की बात कही गई है ताकि उन्हें रोजगार के अवसर सुलभ हो। वही केसरी सिंह बारहठ ने भी शिल्प आधारित शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर एवं उपयोगी नागरिक तैयार करने का सुझाव दिया है।

- नई शिक्षा नीति में शिक्षा क्षेत्र पर सकल घरेलू उत्पाद के 6ठें हिस्से के सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है और केसरी सिंह द्वारा भी राज्य की शिक्षा के प्रबन्ध हेतु राज्य की आमदनी से एक हिस्सा सुनिश्चित करने की बात कही गई है।
- नई शिक्षा नीति में धर्म निरपेक्षता पर बल दिया गया हैं केसरी सिंह बारहठ ने भी सर्व समाज के लिए शिक्षा सुलभ करने की बात कही है।
- नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा व मूल्यों पर आधारित शिक्षा की बात की गई है और केसरी सिंह बारहठ भी परम्परागत मूल्य शिक्षा के प्रबल पक्षधर थे।
- नई शिक्षा नीति में बहु–विषयक और समग्र शिक्षा की बात की गई है वहीं केसरी सिंह बारहठ भी राजनीति, कृषि, शिल्प, वाणिज्य आदि बहुविषयों से युक्त पाठ्यक्रम का सुझाव देते हैं।
- नई शिक्षा नीति गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की अनुशंसा करती है। केसरी सिंह बारहठ भी शिक्षा को मात्र आजिविका का साधन न मानकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बात करते हैं।
- नई शिक्षा नीति में विशेष प्रतिभा वाले व मेधावी छात्रों के लिए सहायता की बात की गई है और केसरी सिंह बारहठ भी उत्तीर्ण छात्रों को राजकीय सहायता देने की अनुशंसा करते हैं।
- नई शिक्षा नीति शैक्षिक विशेषज्ञों द्वारा नियमित मूल्यांकन के आधार पर प्रगति की सतत् समीक्षा का सुझाव देती है वही केसरी सिंह बारहठ भी योग्य उपदेशक द्वारा गांव देहात में शिक्षा की प्रगति को जाँचने की बात कहते हैं।

निष्कर्ष –

नई शिक्षा नीति 2020 का स्वरूप 21 वीं सदी की शिक्षा की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर गढ़ा गया है और केसरी सिंह बारहठ ने ब्रिटिश शासित समाज में शिक्षा की आवश्यकताओं को अनुभव कर अपने विचार प्रस्तुत किये थे। परन्तु आज एक शताब्दी से भी अधिक समय व्यतीत हो जाने पर भी वे विचार उतने ही प्रासंगिक प्रतीत होते जितने की तात्कालिक समय में थे। अतः केसरी सिंह बारहठ के शैक्षिक विचार व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मुख्य तथ्यों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था में स्वतन्त्रता के इतने वर्ष पश्चात् भी अधिक परिवर्तन नहीं आया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

- मानव फतह सिंह – भारतीय साहित्य के निर्माता केसरी सिंह बारहठ साहित्य अकादमी 2016

- चारण डॉ. गजादान (सम्पादक) क्रांतिकारी बारहठ परिवार और गौरव ग्रंथ साहस, संघर्ष एवं बलिदान की अनुपम गाथा अमर शहीर कुँवर प्रताप सिंह बारहठ सेवा संस्थान शाहपुरा (भीलवाड़ा) 2020
- गुप्ता डॉ. मोहनलाल – क्रांतिकारी बारहठ केसरी सिंह, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर 2020
- पालीवाल डॉ. देवीलाल जावलिया डॉ. ब्रजमोहन एवं अन्य – क्रांतिकारी बारहठ केसरी सिंह व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व, प्रथम खण्ड, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, 1984
- पालीवाल डॉ. देवीलाल जावलिया डॉ. ब्रजमोहन एवं अन्य – क्रांतिकारी बारहठ केसरी सिंह व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व, द्वितीय खण्ड, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, 1986
- धमोरा सवाई सिंह (सम्पादक) : पुण्य स्मरण – राजस्थान केसरी ठाकुर केसरी सिंह बारहठ
- www.education.gov.in.NEP_Final_HINDI_0(1).pdf
- www.rpchome.com jktLFkku ds Økafrdkjh dsljh flag ¼1872&1941½
- www.ugc.gov.in_5294663_salient_features of nep_Eng_merged
- www.ugc.gov.in_011334_hindi_he_final_31072020